जीवन की दिशा बदल गई

* ब्रह्माकुमारी नरेंद्रकौर छाबड़ा, औरंगाबाद

पाँच वर्ष पुरानी बात है, शाम के वक्त रोजाना की तरह आस्था चैनल पर ओशो का प्रोग्राम देखकर टी.वी.बंद करने ही वाली थी कि अचानक अगले प्रोग्राम की घोषणा हुई 'अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज़'। यह मेरे लिए नया नाम था। उत्सुकतावश देखने बैठ गई। पहले ही दिन प्रोग्राम ने इतना प्रभावित किया कि अगले दिन से उसे भी नियमित देखने लगी। महीने भर बाद ही राजयोग सीखने का मन बना लिया और घर के निकटतम केन्द्र पर जाकर वहाँ की निमित्त बहन से मुलाकात की। उन्होंने सात दिन का कोर्स करवाया।

ज्ञान मिलने पर हुआ अपने अज्ञान का अहसास

टी.वी. द्वारा दिए जा रहे ईश्वरीय ज्ञान ने नई दिशा दिखाई। कितनी ही पुरानी मान्यताओं का हम आंखें मूंदे अनुसरण कर रहे हैं। महसूस हुआ कि हम अज्ञान में भटक रहे हैं। उन दिनों घुटने में बहुत दर्द होता था। डॉक्टर ने प्रत्यारोपण की सलाह दी थी लेकिन मैं बहुत डर रही थी। निमित्त ब्रह्माकुमारी बहन से यह बात कही तो वे कहने लगीं, अगर यही एकमात्र उपाय है तो ऑपरेशन करा लीजिए, बाबा तो साथ है ही। थोड़ी हिम्मत बंधी, मुंबई में ऑपरेशन की तारीख तय हो गई। जाते वक्त बहन ने बाबा का चित्र देते हुए कहा, इसे अपने साथ रखना, सब ठीक हो जाएगा। अक्तूबर, 2008 में मेरे घुटने का प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक हो गया। आपरेशन थियेटर में जाने से लेकर बेहोशी के इंजेक्शन लगाए जाने तक मैं लगातार बाबा को याद करती रही। दो महीने बाद मैं नियमित कार्य करने लगी।

मधुबन में स्वर्गिक आनन्द

जुलाई, 2009 में मुझे महिला प्रभाग द्वारा आयोजित सेमिनार में भाग लेने का सुअवसर मिला। अपनी एक डॉक्टर सहेली के साथ मैं पहली बार मधुबन (आबू पर्वत) गई। स्टेशन से ही बस द्वारा हमें ज्ञान सरोवर ले जाया गया। वहाँ की व्यवस्था, वातावरण, स्वच्छता, ब्रह्माभोजन, भाई-बहनों, दीदियों व दादियों का प्रेम, सहयोग देखकर स्वर्गिक आनंद का अनुभव हुआ। तीन दिनों में ही ज्ञान का भंडार सुनने को मिला, मन को बड़ी प्रसन्नता हुई। परमात्मा का सही परिचय, सृष्टि-चक्र तथा आत्मा का पूरा

परिचय स्लाइड शो द्वारा दिया गया जिससे सोच की दिशा ही बदल गई। नवम्बर, 2013 में पहली बार बाबा मिलन के लिए मधुबन पहुँची। डायमंड हॉल, प्रकाश स्तम्भ व आसपास का नज़ारा ही आंखों को व मन को सुकून से भर देता है। सवेरे की चाय से लेकर रात के खाने तक की, 25 हजार भाई-बहनों के लिए सुन्दर सुव्यवस्था और स्वच्छता को देख मेरे मुँह से बार-बार यही निकलता रहा, बाबा आपने कमाल कर दिया।

कमियाँ खत्म

पहले किसी कार्य में असफलता मिलने पर दुख और तनाव हो जाता था, अपनी योग्यता पर संदेह होने लगता था। ज्ञान मिलने के बाद अब ऐसा नहीं होता। सफलता मिल गई तो

अच्छा है, नहीं मिली तो उसमें भी कोई राज़ होगा, यही विचार करके सहज रहती हूँ। छोटी-छोटी बातों पर तनाव, अतीत की यादों से परेशानी, क्रोध, शीघ्र ही अपमानित महसूस करना, निर्णय लेने में दुविधा आदि कमियाँ, बाबा की बनने के बाद धीरे-धीरे खत्म हो रही हैं।

सार्थक जीवन बनाने की कला

सेवा की जो भावना ब्रह्माकुमार-कुमारी भाई-बहनों में है वह विश्व के किसी भी कोने में नहीं मिल सकती। नकारात्मक व निरर्थक जीवन को सकारात्मक व सार्थक बनाने की कला सिखाता है यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय। बाबा ने एक और बड़ा उपकार किया है। पीस ऑफ माइंड चैनल के द्वारा घर बैठे ही बाबा का पूरा ज्ञान, परमात्मा के महावाक्य (मुरली), दादियों, वरिष्ठ दीदियों, भाइयों के प्रभावशाली भाषण (क्लासेस) सभी कुछ देखने-सुनने को मिल रहे हैं। हम कितने भाग्यशाली हैं जो स्वयं परमात्मा ने लाखों में से हमें चुनकर हमारा हाथ पकड़ा है। सत्य ज्ञान का खज़ाना वे हम पर लुटा रहे हैं और नई सृष्टि की स्थापना के कार्य में हमें सहयोगी बना रहे हैं। ऐसे प्यारे परमपिता परमात्मा की याद आठों पहर हमारे मन और बुद्धि में रहनी चाहिए। ❖

'मैं' क्या हूँ

ब्र.कु. रामेश्वर प्रसाद रावत, आगरा

मैंने मैं का मर्म न जाना, मैं क्या हूँ पहचान न पाया
हाथ, पैर, सिर, पेट, पीठ के, नाक, कान के नाम गिनाए
आँखों से समझाया सब कुछ, मुख से भी कुछ बोल सुनाए
इन अंगों में मैं न मिला तो, सोच-सोच कर मन पछताया
मैंने मैं का मर्म.....

पूछ लिया जब आप कौन हैं, जाति, धर्म, व्यवसाय बखाना
सम्प्रदाय का परिचय देकर, पद अपने का गाया गाना
इसीलिये तो बढ़ी कामना, अपना यश जीवन भर गाया
मैंने मैं का मर्म.....

यह शरीर मैं का मंदिर है, ध्यान लगा कर इसको जानो
जीवन के सुख सभी क्षणिक हैं, दिव्य दृष्टि कर यह पहचानो
पाप कर्म फिर क्यों करते हो, चल पाये कितने दिन काया
मैंने मैं का मर्म.....

आत्म-ज्ञान जिसको होता है, हानि-लाभ सब एक-समाना
राग, द्वेष से रहित हो गया, सत्य रूप जिसने पहचाना
काम-क्रोध का असर नहीं कुछ, ऋषि, मुनियों ने यही बताया
मैंने मैं का मर्म.....

मैं अनंत अविनाशी जग में, मनोकामना मेरी चेरी
यह शरीर तो वस्त्र पुराना, परिवर्तन में करूँ न देरी
मीठे बच्चो मैं को जानो, शिव बाबा ने यह समझाया
मैंने मैं का मर्म है जाना, मैं क्या हूँ अब ही पहचाना

सकारात्मक संकल्प और शक्तिशाली वृत्ति वायुमण्डल को परिवर्तन करने के साधन हैं